



में कौन हूँ?

में मिट्टी हूँ —  
पाँव में रुलती  
घटा में उड़ती  
पानी में घुलती  
भट्टी में तपतीं

में हवा हूँ —  
कोई रंग नहीं  
कोई रूप नहीं  
बस उड़ती फिरती  
फ़िजा में लहरातीं  
एक- एक को साँसें बाँटती

में पानी हूँ —  
सब की प्यास बुझाती  
नदी में बहती  
सागर में मिल जाती  
फिर उड़ बारिश बन आती

में अग्नि 🔥 हूँ —

सूरज से निकली  
में रोशनी बिखेरती  
मेरे बिन कुछ भी नहीं  
में ज़िंदगी बाँटती

में आकाश हूँ —  
में अथाह हूँ  
कितने ही सूरज  
कितने चाँद सितारे  
में तो असीम हूँ

पाँच तत्वों की  
यही है कहानी  
किसने कही  
किसने जानी  
सुनो - मिट्टी के  
पुतले की जुबानी।

उपजिंदर